DWARKA
MAHATMY
हिंदी भाषामें श्रीं द्वारका महातम्य
छपाके प्रसिद्ध करनेवाला-त्रवाडी देवजी दयाशंकर
राधा कृशन प्रिन्टिंग प्रेस-जामनगर
मिळनेका पता-भुदरजी गोपाळजी छत्रीव.ला मु. द्वारका

॥ श्री द्वारकानाथजीकी स्तुति ॥

राग कल्याण

मेरा मन हर लीने, राजा रणछोड-मेरो मन ॥१॥
ओधव माधव श्री पुरुषोत्तम, नटवर नंदकीशोर मेरो मन
गोविन्द गोवर्धन धरणीधर, गती अपनी हे ओर मेरो मन
आ भवका जंजाल तोडकर तुज चरणे चित जोर मेरो मन
द्वारवतीका देव देव प्रभु भवभय बन्धन तोड मेरो मन॥

श्री लक्ष्मीनाराणयण

॥ श्री ॥

द्वारका महातम्य

हिंदुस्तानी भाषामे

छपाके प्रसिध करनेवाला

त्रवाडी देवजी दयाशंकर.

राधा कृश्न प्रिन्टिग प्रेस-जामनगर

१९२७ १९८४

कीमत अमुल्य

श्री कृष्ण भगवान ओर रुक्षमणीजी दुर्वासामुनीका रथमे
जुत कर रथ चलावे हे
श्री कृष्ण भगवानका ब्रामणो पर
कैसा प्रेम है सो देखो

अनुक्रमणिका

स्तुति पंचरत्न श्री बदरीश

पवनं मंद सुगंध शितल हेम मन्दिर शोभितं निकट गंगा वहति निरमळ श्रीं वद्रिनाथ विश्वंभरं
शेष सुमिरन करत निशदिन ध्यान धरत महेश्वरं श्री वेद ब्रह्मा करत स्तुति श्रीं व्रद्रि०
इंद्र चंद्र कुबेर धुनिकर धुपदीप प्रकाशितं सद्ध मुनिजन करतं जय जय श्रीं बदरि०
शक्त गारि गनेश शारद नारद मुनि उचारणं योग ध्यानि अपार लिला श्रीं बदरिं०
दक्ष किन्नर करत कौतुक ज्ञान गंधर्व-प्रकाशितं श्रीं लक्ष्मि कमला योग ध्यानि अपार लीला श्री
कैलासमे एक देव निरंजन सैलशिखर महेश्वरं राजा युधिष्टिर करत स्तुतिं श्रीं बदरीं
श्रीं बदरिनाथजीके पंचरत्न पठत पाप विनाशनं कोटी तीर्थ भयो है पुण्य प्राप्ति फलदायकं

॥ શ્રી ॥

દ્વારકાનાથજીના

મંદીરનો

અને

ગોમતીજીના

સંગમનો દેખાવ

પ્રકાશક

ત્રવાડી દેવજી દયાશંકર

રાધા-કૃષ્ણ પ્રેસ

જામનગર,

॥ श्री ॥

द्वारकाधिशजीका

मंदिर

और

गोमतीगंगाका

संगमका देखाव

प्रकाशक

दैवजी दयाशंकर

राधा कृष्ण प्रेस

जामनगर.

श्रीकृष्ण सुदामाजीकी

भेंट

શ્રી કૃષ્ણ સુદામાજીની

ભેટ
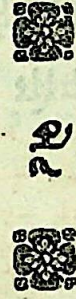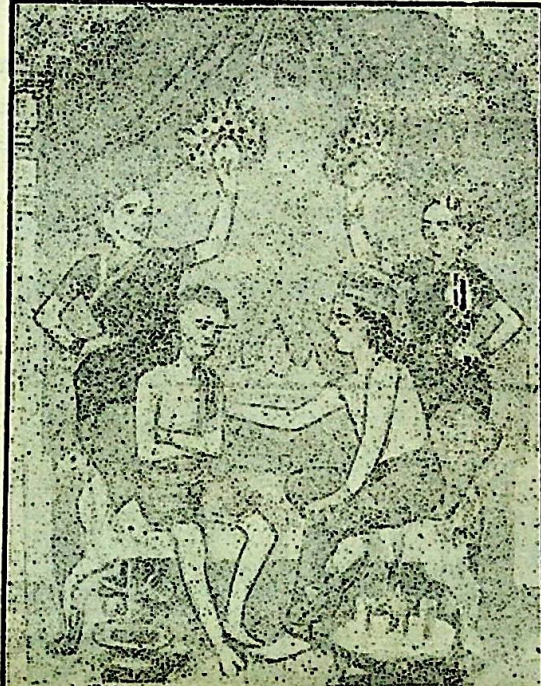
॥ ॐ ॥

श्री द्वारकानाथजीकी सति द्रौपदिने करी हुइ स्तुति

खिम काज लाज महाराज लाज मइ मेरि दुःख हरो द्वारकानाथ सरणमे तेरि
दुशाशन वंश कुठार महा दुखदाइ कर पकरत मेरो चिर लाज नहिं आइ,
अब भयो धर्मको नाश पाप रपयो छाइ बढि अधम सभामे मारि पर्ष बिलखाइ
शकुनि दुर्योधन करण खडे बल घेरी दुःख हरो० ॥ १ ॥

तुम दिनभक्ति सुधि लेत देवकिनंदन महिमा अनंत भगवंत भक्तदुख भंजन
तुमे कियो सिया दुख दुर शंभुधनु खंडन अति आरत मुनि गोपाल मुनि मनेरंजन
करुणाविधान भगवान करो कृपा डेरि दुख हरो०

तुमे सुनि गजेन्द्रकि टेर विश्व अविनाशी मारी ग्राह छुडाइ बंधि काटि पग फांसी
मैं धरौं तुमारो ध्यान द्वारकावासी अब हमारे राज समान करावत हांसि
अब कृपा करो यदुनाथ जानि चित चेनी दुख हरो०

तुम पतित राखी प्रहलाद दास दुख टारो भये प्रगट स्तंभ नरसिंह असुर संहारो
वृज खेलत केशि आदि वकासुर मारे मथुरा मुष्टिक चाणुर कंसको मारे
तुम मातपिताको जाय छुड़ाइ वेरी दुख हरो॰
लियो भक्तन हित अवतार कहाइ तुमने नलकुबरकि जड़योनि छुडाइ तुमने
जल वर्षत महिमा अगम दीखाइ तुमने नखपर गिरि धारि वृज लीयो वचाइ तुमने
प्रभु अब विलंब क्युं करी हमारी वेरी दुख हरो॰
बेठे सब राज समाज निति जिन खोइ नहिं कहत धर्मकी वात सभामे कोइ
पांचं पति बेठे मौन कोन मति होइ ले नंद नंदनको नाम द्रौपदि रोइ
कृष्ण करी विलाप संताप सभामे टेरि दुख हरो॰
सुनि दिन बंधु भगवान भक्त हितकारि भये चीरमे प्रगट आप वनमाली
खेंचत हारो मतिमंद वीर बलकारी देखि लइ दिनकी लाज आप वनमाली
हर्षत सुर वर्षत सुमन बजावत भेरी दुख हरो॰
क्या करीं द्वारकानाथ मनोहर माया अम्बरका लगा दहार अंत नहि आया
तिन लोकचतुर्दश भुवन धरिन्दर धाया हिंमत हार्या मतिमंद सतीपद नाम्या
दिननके दिननाथ विपति निवेरी दूख हरो॰

श्री

द्वारका और पिंडतारकक्षेत्रका महातम भाषांतर प्रारंभ
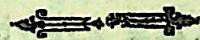
अध्याय १ ला.

ऋषियोंका ब्रह्माजी पास जाना. वहांसे पातालमें बलिराजा और प्रह्लादजी पास जाना।

श्लोक,

नारायणं नमस्कृत्य नरंचैव नरोत्तमं॥
देवि सरस्वति व्यासं ततो जय मुदीरयेत् ॥१॥

नारायणकुं, सबीमें श्रेष्ठ मानके भगवानकुं और सरस्वति देवी और व्यासजी उनकु प्रणाम करके ग्रंथका आरंभ करते है.

कलियुग काळ प्रगट होनेसे रुषि मुनिओ गभराये के कलियुगका प्रबल दिवसो दिवस वहोत वधते हय. ओर धर्मका नाश होके अधर्म फेलाते हय एसा महा कलियुगमें अपने श्री कृस्नभगवान विना केसे रहेगे ? भगवान कहां होगा? एसा विचार करते थे इतनेमें उदालक रुषि कहेने लगा के हे रुषिओ, अपने जगतका पिता ब्रह्मा पास जाके विष्णु भगवान कहां हे ये वात पुछ देखे,

एसा कहेना सुनके रुषिमंडल ब्रह्माकी पास गये. ब्रह्माने प्रसन्न हो के पुछा के आप कायकु पधारे हो ? एसा सुनके रुषिओ अरज करनेकु लगाके अब महा कलियुग चलनेकु लगे हे, सो वोस्नुभगवान कहां विराजते हे सो हमकु कहो.

ब्रह्मा कहेते हे हेम तो मरस कच्छ रुपका पुजन करता हय, विस्णु कहां हय सो हमकु मालुम नहि हे. एसा ब्रह्माजीका वचन सुनके रुषिओ कहेनेक लगे के अ...

मालुम नहि हे. सो प्रयागमें जाकर हमारा देह निकालेगे, क्यु के भगवान विना पृथ्वी पर हमसे नहि रहा जायगा, ए । ऋषिओका कहेना सुनके ब्रह्माजी कहेने लगा तुमकु एक उपाय दिखाते हय. के आप पातालमें जहां बलिराजा रहेता हय वहां जाओ वहां श्रीकस्न परमात्माका भक्त प्रह्लादजी हे ये तुमकु दिखायगा. एसा सुनके पातालमे वळीराजा पास पातालमे गये. वहां प्रहलादजी ओर वळीराजा सामने लेनेकु गया ओर सत्कार करके आनेका कारण पुछा. तब ऋषि कहेने लगा, के महाराज कळियुग प्रथ्वीपर चलता हे उसने धर्मका नास करके अधर्मकु वढाया हे, वेदमार्गका नास हुवा हे, जारकर्म. चोरका बात जोर हे पुरुषोकु स्त्रिओने वस किया हे. ब्राह्मणोका ब्रह्मपणा गया. एसा वखतमें हम विष्नु भगवान विना किस तरहसे रह सके? उसके लिये हमकु उनका रहेनेका स्थळ आप वताओ.

प्रह्लादजी कहेता हे–हे महा ऋषि पश्चिम समुद्र किनारे स्थापी हुइ कुशस्थली

नामे नगरी है. वहां समुद्रकी साथ मिली हुइ गोमती नदि महा पाप निवारण करने-वाली वहेती हय, ये नगरीकु इस जमानेमे द्वारका कहेते हय, वहां शाक्षात करन भगवान शंख, चक्र, गदा, पद्म आयुध धारण करके रहेते है. वहां जो आदमी कलियुगमें जाते ऊनकु मुक्ति मिलती हय. एसा प्रहलादजीका कहेना सुनके रुषिओ कहेने लगा के यदुकुलका नाश हुवा पिछे प्रथ्विका भार उतारके श्रीकस्नभगवान प्रभासमे पीपलेका थडका आश्रय लेके स्वधाममें पधारे गये ओर द्वारकाकु चारू तरफसे समुद्रने जलमे डुबा दिया है, ओर आप क्युं कहेते हो के भगवान द्वारकामें हय ?

श्री द्वारका महोातमका अध्याय १ ला संपूर्ण.

अध्याय २ जा.

श्रीकृष्ण दुर्वासाकुं मिला और रुक्मणि श्राप

बळीराजा प्रह्लादजीकु कहेता है—विष्णु प्रथवीमें ओसा दुशमे केसे रहेता है इस वात हमकु कहो.

प्रल्हादजी कहेता है—ऊग्रसेन राजा प्रथविका राज्य करता था ओर श्रीकरन भगवान द्वारकाकु शोभावता था. एसा श्रीकरन भगवान लक्ष्मीजीका पति एक दिन सभामैं बेठे थे उस वख्त उद्धवजी श्रीकृष्नकु कहेने लगा के आपके पुत्र पवित्र दुर्वासा रुषि यात्रा करनेकु आया हे एसा सुनके श्री करन उठके आनंदमै रुक्षमणिका मकानमें आये ओर दुर्वासा रुषि यहां आया हय एसा खुशखबर कहा ओर कहेने लगे के अपने दोनु दुर्वासा रुषिकु भोजनके लिये आमंत्रण करनेकु जावे, एसा पतिका

बचन सुनके प्रेमसे सति रुकमणि रथमें बेठके श्रीक्रस्न ओर रुकमणि दोनु जहां दुर्वासामुनि था इस मकानमें गया. ओर भिष्मक राजाकी पुत्रि रुकमणिने दुर्वासाकु दंडवत किया, ओर दोनुका कुसल समाचार पुछके कहाके हाल तुम कहां रहेतेहो? आपकु कितना लडका लडकी हे? कितनी स्त्री हे सो विस्तारसे कहो,

श्रीकृष्न कहेते हे=समुद्रने हमकु बार योजन पथ्वि दियाहे वहां हमने सोनेकी नगरि बनाइ हे. जहां नेव लाख सोनेका महेल हे. एसी नगरिमें आपकी कृपासे में वहां रहेताहुं. एसा सुनके दुर्वासाऋषि हसे ओर कहेनेलगे के आपकी नगरिमे कितना आदमी रहेता हे; आपकु राणी कितनी हे लडका लडकी कितना हे सो कहो,

श्री क्रस्न कहेता हे–हे महाराज हमे सब वात कहेते हे, सोळ हजार एकसो आठ हो मेरी स्त्रि हों वे सबमें रुक्षमनि मेरी पटरानि :हे, ओर दरेक स्त्रिकु

दस दस पुत्र ओर अकेक पुत्रि हे. छपनकोटि यादव मेंश परिजन हे दुसरि असंख्य प्रजा नगरिमैं रहेति हे.

दुर्वासा मुनि भगवानकु कहेता हे—अभि तुम कहो के मेरि पास कोन कामके खातिर आया हो ? एसा सुनके श्रीकस्नने कहाके आप प्रसन हो तो हमारा मकानमे पधारके आप मकान पावन करो, आपका चरनका जल शिर पर चडाके हम प्रसन होवे,

दुर्वासा रुषि कहेते हेय—हे श्रीकस्न, हम वहोत क्रोधि हुं, हमकु कायकु मकान पर बुलाते हो ? जेसे अग्निमैं शितलताका गुण नहि हय एसे ये दुर्वासामे क्षमाका गुन बिलकुल नहि हय,

प्रहलाजजी कहेते हय—श्रीकस्नकी वात स्विकारके दुर्वासा मुनि भगवानका रथमैं

बेठके चलने लगा. इस्तेमे दुर्वासा कहेने लगा के तुम दुर्वासा मुनिकुं नहि पिछानते हो ? इस रथके घोडेकु छोडके तुम रुकमणी सहित रथमें घोडेके बदल जुतके हमकुं ले जाओ,

श्रीकस्न कहेते हे—आप जेसे कहोगें एसा हम करेगा,

प्रल्हादजी कहेते हय—श्रीकस्न ओर रुक्षमणि रथमे जुते. दुर्वासामुनी रथमें बेठे ओर चलने लगा. उसकु देखनेसे सब देवताओ कहेने लगाके कउन परमात्माका ब्राह्मणो पर प्रेम केसा हय के रुक्षमणि सहीत रथमे जुते हे; एसा कहेके देवताओ जय जयका पुकार करने लगा. इस्तेंमे चलते रुक्षमणिकु पाणीकी प्यास लगी ओर भगवानकु कहेने लगी महाराज ये रीसाल ब्राह्मणकु खेचनेसे मेरेकु थक लगी हे ओर पानीकी पीयास लगी हय. सो पा कर अपने मंदिरमें ले चलो, रुकमणिका वचन

सुनके श्रीक्रस्न भगवानने पृथ्वीकु पाऊंसे दबाके वहां गंगाजी प्रगट करके रुक्मणिकु पाणी पिलाया. ये देखके दुर्वासाकु क्रोध चढा ओर रुक्मणिकु श्राप दिया.

दुर्वासा कहेहे हे-रुक्मणि हमेरी आज्ञा विना तुमने जल पिया उनसे श्रीक्रस्न भगवानका तुमरेकु वियोग होगा. एसा कहेके रथमेसे नीचे दुर्वासा उतर पडे ओर रुक्मणिकु श्राप होनेसे रोनेकु लगी ओर भगवानकु कहेने लगी ने आप विना मेरे दिन केसे कटेंगे,

श्रीक्रस्न कहेते हय-हम दुररोज दो वखत आपको पास आयगा जो आदमी द्वारकामे दर्शन करेगे. उसकु आपका दर्शन भी करना पडेगा, जो आपका दर्शन नहि करे वो यात्राका आधा फल जात्रिकुं मिलेगा, उसमे संशय नहि हे,

प्रहलादजी कहेते हे-रुक्मणिकु एसा कहेके भगवानने दुर्वासामुनि पास क्षमा

गी और बहार बगिचेमें दुर्वासाका चरन धोकर अपना शिरपर चढाया.

श्री द्वारका महात्म्यका अध्याय २ रा संपूर्ण.

अध्याय ३ रा,

भागिरथी गंगाका पधारना,

रुक्षमणिजी मुर्छाने है एसा समुद्रकुं मालुम हुवा. क्युंके आगछे जन्ममे समुद्रका पुत्रि थी, इस लिये समुद्र धिरज देनेकु आया; इतनेमें नारदजी आकाशमार्गसे आया.

नारदजि कहेते हे=हे कल्याणि! ब्राह्मणका श्रापसे तुमेरा पति दुर हुवा एसा मानके तुम नाराज न होना. क्युंके वे तुमेरेसे कधि दुर नहि रहेते हे, ये तो कलियुगमे ब्राह्मणकी आज्ञा सबलोक माने इस लिए लीला दिखाते हे, एसा कहेके नारदजी

बोलते बंध हूवे तब समुद्रने कहा के मेरी आज्ञासे भागिरथी गंगा यहां पधारे हे सो देहधारी होके आपकी पास बातचित करेगा ओर उसका जलसे वहां नंदनवन जेसा सुंदर वन होगा. एसा कहेके समुद्र ओर नारदजी चले गयें,

प्रहलादजी कहेते हे–समुद्रने कहा था उस माफिक भागिरथि गंगा वहां आके जलसे सुंदर वन बनाया, समुद्र साथ मिलनेवाली गंगाजी वहां आनेका सबकु मालुम हुवा जब द्वारकावासी सब वहां जानेकु लगे. इस बात दुर्वासारुषिकु मालुमहुइ, दुर्वासा क्रोधायमान होके कहेने लगे.

दुर्वासा कहेता हय–हमाराबचन कोन मिथ्या करनेवालेहे? मेरा आपका अनादर करके रुक्षमणि बन बनाके आनंद करती हे उनके लिए ऊनकु श्राप देता हुं के सब ब्रक्षो फल विनाका होयगा ओर गंगाजी शिवका मस्तकपर रहेरा हे सो जब देहधारी होके न रहे एसा बचन सुनतेमें सब झाड सुकागया ओर गंगाजी अपने स्थानकु गया

प्रह्लादजी कहेता हय-गंगाजी ओर वन स्थानकु गये जिससे रुकमणिकु बहोत दुःख लगा उससे रुक्षमणिने अपना वस्त्रका फांसा गलेमे नाखके श्री कृष्नका ध्यान लगाके लटकनेका नकी कीया, अंतर्यामी परमात्माकु मालुम हुवा. तरत आप गरुडपर बेठके रुक्षमणि पास पधारे ओर फांसा नीकालके कहेने लगा के हे देवि ! हेम जीव रुप हे, तुम बुद्धिरुप हो. एसा हे ओर तुमने वियोग माना ये ठीक नही. देखो जो दुर्वासाने श्राप दियाहे वो दुर्वासा आते हय. इतनेमें दुर्वासामुनि पश्चाताप करते आ थे

दुर्वासा कहेता हय-जगतका मातपिता श्री कृस्न भगवानकी क्षमा ओर रुक्षमणिकी क्षमा मागता हुं. एसा कहेके कहने लगा के भगवान आप द्वारका पधारो

श्रीकृस्न कहेते हे-हे महाराज, ब्राह्मण जो कहे सो होवे इस बात हमने कबुल कीया हे जिससे हे मति दिनमें दो वखत हम यहां आयगा ओर ऊपका मनका समा-

धान करेगा, हम वैकुंठ पधारेगा उस वखत श्रीं कमजीकी मुर्तिमे हेम रहेगा. भागिरथी गंगा सर्वके दुःख नाश करेगे. एसा कहेके उधरही रुषिकु रखके भगवान द्वारका पधारे. श्रीकृस्न भगवानकु दुर्वासा कहेने लगा के तुम मत जाओ. हम तुमेरी पर प्रसन्न हे, कुच्छ वरदान मागो,

भगवान कहेते हे—महाराज आप प्रसन्न हो तो यहां द्वारकामे आप निवास करो "एसा सुनके इस वात कबुल करके दोनु द्वारकाजीमे रह.

श्री द्वारका महातमका अध्याय ३ रा संपूर्ण,

अध्याय ४ था

द्वारका यात्राका महातम

प्रहलादजीने ऋषिओकु यात्रासे कहाथा सो लाभ,

प्रहलादजी कहेते हे=हे ब्राह्मणो हम गुप्तबात आपकु कहेतेहे सो सुनो. आदमी द्वारका जानेका जहांसे मनमे निश्चय करते हे उसी वखत उनका पितृओ नर्कमेसे मुक्त होके स्वर्गमे जाके आनंद करते हे, द्वारका जानेवाला आदमी अपना गामसे ... छोडके द्वारकाजीके रस्ते चलनेकु लगा के हरेक कदममे अश्वमेधयज्ञका फल मिलते हे. ओर द्वारकाधीशजीकी धजाका दर्शन होवे के जो आदमी गाडी. घोडा वाहनपरसे उतरके पेदल चले उसका पांच प्रकारका पाप नास होतेहे ओर स्वर्गका द्वारजेसा द्वारकामें आके स्नान, दर्शन, गौदान; सेजादान, जमीनदान ओर

श्राद्ध श्रद्धासे करेगा उनकी सात पेढीका पितृ स्वर्गमे जाके आशिर्वाद देगा. ओर द्वारका चार धाममें बडा धाम ओर सात पुरिमें पुरि हे जिसे यहां तो अवश्य उपर कहा मुजब जो करता हे उनकु फिर जनम नहि लेना पडता ओर अपनी जिंदगीमे यात्रा करना ये तो अपना पितृका हित खातर हे. ऊसके लिए चंद्रशर्माका पितृओका प्रेतकी योनिमेंसे उद्धार हुवा हे सो सुनो.

श्री द्वारका महातमका अध्याय ४ था संपूर्ण.

अध्याय ५ मा.

प्रेतयोनींमेंसे चंद्रसर्माका उद्धार होना

मार्कंडेय रुषि कहेते हे-एक वखत इंद्रद्युम्न राजाकु मार्कंडेयऋषि कहाने के

कलियुगमे श्रीकृष्न भगवान् द्वारकामे वसते हे, वहां जानेसे और गोमती स्नान करनेसे क्या फल मिलते हे सो सुनो. पुर्वे चंद्रशर्मा नामका माळव देशका एक सदाशिव का भक्त ब्राह्मण था. ए ब्राह्मण कोइ दिन अगीयारसका व्रत नहि करताथा, एसा करते करते ९९ सालकी ऊमर हो गइ. एक दिन प्रभास क्षेत्रमें सोमनाथ महादेवका दर्शन करनेके लिए ब्राह्मण ग थे उस वखत प्रभास क्षेत्रमे बोत आदमी द्वारका यात्राके लिए आये थे. उसने चंद्रशर्माकु द्वारका जानेका किया, लेकीन नहिगये, एकादशी रहेनेका बोत महातम हे एसा कोइने उसकु समजाया लेकीन नास्तिक ब्राह्मण कहेने लगाके शिववरत हम करते हे एसा कहेके एकादशीका व्रत छोडके अपना मकानमे गया, वहां स्वप्नामें उसका बापदादा प्रेत हुवाथा उसने देखाव दिया ओर कहेने लगे के डरना नहि. हम तुमारा बापदादा चचा विगेरे हे. हम बोत दुःखी होनेसे तुमारो पास आयाहे, एसा सुनके चंद्रशर्मा कहेने लगा के मेंरा बापदादाने दानपुन बोत किया

हे सो ओ प्रैत होवे नहि, एसा सुनके चंद्रसर्माका पूर्वजो कहेने लगा के हमारा कुळमे तुम एकादशिका वरत करके रात्रिका जागरण नहि करौ वहांतक हम प्रैतमेंसे नहि छुटेगा. चंद्रशर्मा कहेने लगाके प्रैतपणा छुटनेका रस्ता दिखाओ, प्रेतो कहेताहे गयाजि प्रयाग पुष्कर कुरुक्षैत्र अयोध्या ऊजैन मथुरा आबु और दुसरा लाखो तिरथो करनेसे प्रेतपणा छुटता नहि, फक्त गोमती स्नान करके श्राद्ध करनेसे प्रैतसे मुक्त होताहे, गोमतीजीका जल हे सो प्रेतयोनि निकालनेवाला हे कलियुगमै गोमतिकु जाके पितृओकु जल दनेसे मुक्ति होती हे, ऊनके लिए तुम दुवारकाजी जाके दरसन करके. श्राध करके, हमारी मुक्ति करके हमारी प्रेतयोनिसे मुक्ति करना

एसा सुनके चंद्रशर्मा द्वारकामे जाके श्राधकर्म करके गोमतीस्नाने करके श्री क्रस्नकी पुजा अर्चा करके थोडा समयमे श्रीक्रस्न भगवानकु प्रसन किया, भगवान कहेने लगा के चंदरशर्मा तेरी भक्तिसे हम प्रसन हे. तेरा पितृओकी प्रेतमेसे मुक्ति

हुइ हे; चंद्रशर्माका पितृओ स्वप्नामें कहेने लगा के तेरा कल्याण हो, हमारी मुक्ति हो गई हे, एसा कहेके गया और भगवानने आशिरवाद दिया के तुम सो वरसका आयुष भोगवेगे. और सो वरस पिछे मेरी पुरिमें मरेगा एसा वरदान दिया. भगवान अंतरध्यान हो गया. और चंद्रशर्मीने सो वरस पिछे द्वारकामें देह छोड दिया,

श्री द्वारका महातमका अध्याय ५ मा संपूर्ण.

अध्याय ६ ठा

प्रथविपर गोमतीजीका पधारना,

द्वारकामें गोमतीजी केसे पधारे और गोमतीस्नान करनेसे क्या फल मिलते हे सो मालुम होने के लिए निचे खुलासा लिखा जाता हे,

द्वारका समुद्रमे डुबी पिछे श्रीकृस्न भगवानकी नाभि कमलमेसे ब्रह्माजी प्रगट

हुवा. जब भगवानने नवि सष्टि ऊत्पन्न करने का ब्रह्माजीकु कहा.

ब्रह्माजि कहेते हे=हमारे परिब्रह्म परमात्मा श्रीकृस्न भगवानका रुपकु देखना हे, सो नवी श्रष्ठि बनाके जंजालमें नहि पडेगे, एसा कहेके पश्चिम समुद्रके किनारे जाके तप किया. जब आकाशवाणी हुइ के मुनि अब चक्र निकलेगा. ओर पोछेसे शेषशायि भगवान निकलेगे. उसी मुजब चक्र निकले ऊसकी पुजा करके पिछे भगवानकी राह देखते मुनि ब्रह्मा प्रभूका ध्यान धरके बेठे ओर ब्रह्माजीने गंगाजीकु कहा तुम भगवानके लिए पृथ्वि पर जाओ. वहां तुम गोमतीजिका नामसे प्रगट होना, ओर वशिष्ठके पोछे जाना उससे वशिष्ठकी पुत्री ये नामसे सब पिछानेगे, एसा वचन सुनके वशिष्ठके पिछे समुद्र तीरे गये वहां सेषनागपर भगवान प्रगट हुवा उसका चर्ण धोयें पिछे गोमती समुद्रमे गइ,

श्री द्वारका महातमका अध्याय ६ ठा संपूर्ण.

चक्रतीर्थका महातम

भगवान गोमतीजीकु कहेते हे—हम हमेशां हम यहां द्वारकामे निवास करेगा. ओर तुमारा जलमे जो आदमी स्नान करेगा उसका सबि पाप नाश होगा ओर प्रथम सुदर्शनचक्र निकले हे. जिससे ये तिर्थ चक्रतिर्थ नामे प्रसिध होगा. ओर छोटा बड़ा सबि जातका चक्र वहां निकलेगे, वहां स्नान करनेसे एकहजार अश्वमेव यज्ञ करनेका पुन्य होता हे ओर आखिरकु मुक्ति मिलती हे ये चक्रमेसे बार चक्रवाला पाषाणकु द्वादशात्मा ओर सुदर्शन कहा जायगा. दो चक्रवाला लक्ष्मीनारायण, तीन वाले अच्युत चारवाले जनार्दन पांचवाले वासुदेव. छवाळा प्रद्युमन सातवाला बलदेव आठवाला पुरुषोतम नववाला नवव्युह दसवाला दसावतार. अग्यारवाला अनिरुध,

शरवाला द्वादसात्मा और उनसें ज्यादः चक्रवाला अनंत एसा नामवाला चक्रोकी पूजा करनेसें उत्तम स्थानकी प्राप्ति होती है.

श्री द्वारका महातमको अध्याय ७मो संपूर्ण,

अध्याय ८ मा

गोमतीस्नान विधि

प्रथम गोमतीजिमे स्नान करती वखत प्रणाम करके हाथमे दर्भ तुलसी अक्षत श्रीफल गंगामेट पंचरत्न लेके पुर्व मुख बेठके विधिपुर्वक पंडा अगर सुकलको पाससे षोडशोपचार कराके स्नान करना, यहां स्नान करनेसे कुरुक्षेत्रमे सुर्यग्रहणमे स्नान करनेका पुन्य होता है ओर सिंहराशीका ब्रहस्पति हो उस वखत गोदावरिमे स्नान

करनेसे जो पुन्य होवे उससे अधिक फल गोमतीस्नानमे है, गोमती श्राध करनेसे हजार अश्वमेघयज्ञका जो फल मिलता है एसा फल गोमतीश्राधका है. ओर सात पेढिका पितृ तारके मोक्ष करनेवाली गोमती है. जो आदमी चहाय वहां मरा होवे उसका अस्थि (हड्डी) यहां डालनेसे मुक्ति मिलती है उसमे शंका नहि है,

श्री द्वारका महातमका अध्याय ८ मा संपूर्ण;
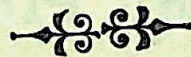
अध्याय ९ मा

सतयुगमे दुर्वासाका पधारना

सतयुगमैं दुर्वासामुनि फिरते फिरते मोक्षकी इच्छासे द्वारकामे गोमती संगम ओर चक्रतिर्थ मुक्ति देनेवाले है एसा निश्चय करके ओर गोमतीजीमे स्नान संध्या

करे पीछे अन्न लेगा. एसा निश्चय करके गोमतीकिनारे गयैं ओर कपडा उतारके गोमतीस्नान करनेके लिये हाथमे मृतिका लेते हे इतनेमें दैत्योने दुर्वासाकु देखा ओर कोन हे एसा कहेके बात मार मारने लगा,

दुर्वासा कहेते हे—मै गरिब ब्राह्मण हुं. ओर भूख लगी हे, गोमतीस्नान करके पिछे अन्न खायगा, मेरा नाम दुर्वासा हे, मेरेकु क्युं मारते हो ? दुर्वासाका कहेनेपर कोइका लक्ष नहि गया. ओर मारना बंध नहि कीया. छेवट रुरु नामका एक दैत्य था, उसने मार बंध कराया ओर दैत्यो ऊसका कपडां लेगया. दर्भ पानीमे डारु दिया एसा करके दुर्वासाकु पकडके ले गया. ओर कहेने लगा ते अब यहां आयगा वो मार डालेंगे, एसा कहेके दैत्योने छोड दिया ओर अपने स्थानकु गयां.

श्री द्वारका महातमका अध्याय छठा संपुर्ण

अध्याय १८ मा

पातालमै दुर्वासाका जाना,

दुर्वासा कहेते है=दैत्योकु श्राप देनेमे मेरा तप नष्ट होवे और सब तपस्वि मेरी निंदा करे मेरेकु च क्रतिर्थमै स्नान करा सके एसा भगवान है सो पाता: लमे है उसके शरण जाना. एसा कहेके पातालमें दुर्वासामुनि गये. बलिराजाका दरबारमे गये वहां नाच होताथा, और आनंद होताथा, दुर्वासा मुनि कु देखके बलिराजाने पुजा करके आसनपर कहेने लगा. के हे उत्तम मुनि दुर्वासाजी आपका पधारना कायकु हूवा,? हमकु आज पावन किया है.

दुर्वासा एसा वचन सुनके आनंदमें आया, और बलिराजाका द्वार पास त्रिविक्रम भगवानकु देखके रोनेकु लगा ने कहेने लगा के रक्षा करो रक्षा करो. एसा कहेके मार पडा था सो दिखाया, मार देखके भगवान क्रोधमे कहेने लगा,

भगवान कहेते हे तुमेरा कोनने अपमान किया हे ?

दुर्वासा कहेते हे=गोमतीस्नान करनेकी इच्छासे हम गया. वहां दैत्ये मेरा कपडा लगय, और मारमारके हमकु निकालदिया, एसा वचन सुनके भगवान कहेते हे

भगवान कहेतेहे-हे उत्तम ब्राह्मन भक्तिके लिए बलिराजा पास हम बन्धनमे हे सो आप उसकी पाससे हेरी मागनी करो- (वांचनेवाला कहेगा के भगवान बलिराजाका द्वारपाळ होके क्युं रहा ? उसका थोडा खुलासा हम इहां करतेहे.

सतयुगका अंतमे बलिराजाने इंद्रकु जीता, उनकेलिए कश्यपऋषिके वहां वामनरुप से भगवानने अवतार लेके त्रिविक्रम कहेवायाथा और याचना करके बलिराजा पास

तींन कदम जमीन मागी थी. ओर पृथ्वी दिया जब पातालमें बलिराजाकु डालदियो बलिराजाने भक्तिसे भगवानकु प्रसन्न किया, जब अनुग्रह करनेके लिए बलिराजाके वहां द्वारपाल होके भगवान्न रहे,

त्रिविक्रम भगवानका कहा मुजब बलिराजा पास भगवानकी मागगी किये हे, हे राजा आप दान भक्ति ओर यज्ञमें उत्तम हो. वास्ते भगवानकु मेरी साथ भेजो जिससे हम गोमती स्नान करे.

बलिराजा कहेते हे=हे ब्राह्मण आप कहेता हो एसा नहि होगा, क्युं के अपने हाथसे कोन आग लगावे ? अपने हाथसे कोन झेर खावे ? अपना शिर अपना हाथसे कोन काटे ? मेरा सर्वस्व जाओ लेकीन वामनजीकु नहि दिया जायगा, दुसरा जो मागो सो हम देनेकु तैयार हे,

दुर्वासा कहेते हे-मेरेकु लोभी मत समजो, भगवानकी मेरेकु जरीयत हे. दुसरी कुच्छ इच्छा नहि हे.

बलिराजा कहेते हे—हे ब्राह्मन तुमकु मालुम हे ? के भगवानने वराह अवतार लेके हिरण्यकश्यपकु मारके पृथ्विका हरण अपना बलसे किया था और मेरा दादो के इसे नहि मारा जाय एसा हिरण्यकश्यपकु नृसिंहरूप धरके मारा था और तीन कदम प्रथवी ले के विराट स्वरूप धरके मेरा राज्य लीया एसा भगवान मेरा हाथमे आया हे उसकु नहि छोडेगा.

दुर्वासा कहते हे—आप नहि छोडेगा तो हम यहां देहत्याग करेगे; क्युं के गोमतीस्नान विना प्रसाद नहि पायगा, एसा सुनके बलिराजा कहेते हे अपने जो करना हो सो करो, लेकीन भगवानकु नहि छोडेगा.

भगवान कहेतेहे—हे मुनि आप निश्चिंत रहो. आपकु गोमतीस्नान मैं करायगा भगवानका कहेना सुनके बलिराजा नीचे पडके भगवानका दोनु पाउ दोनु हाथसे पकडके कहेने लगा.

बलिराजा कहेते हे–हे महाराज आप मेरी पास वचनसे बंधा हुवा हो. सो हमारी रक्षा करना. एसा सुनके दोनु चरणपादुका बलिराजाकु देके बडा रूप करके दुर्वासा मुनि साथ गया, शेषनाग उसकी साथ गया, और संगमपर जाकर दुर्वासाकु वहा के तुमारी इच्छा मुजब स्नान त्रपण करो. पिछे बडा आनंदसे स्नान त्रपण किया,

श्री द्वारका महातमका अध्याय १८मा संपुर्ण.

अध्याय १९मा

दैत्योका राजा कुसका वध और मिले हुवे वरदान

वेदका अवाज सुनके दुर्मुख नामका दैत्य दुर्वासाकु कहेने लगे हे ब्राह्मण ? तुमकु एक दफे जाने दिया तो दुसरी दफे मरनेके लिए क्यु आयाहो ? [illegible]

मारनेकु गया जब भगवान्ने चक्रसे उनका शिर कार्टादया. इस बात दैत्योकु मालुम हूइ जब इमग बोत दैत्य आया. महायुद्ध हुवा, बोत दैत्यो मारे गये. पिछे दैत्यका राजाकु मालुम हुवा,

कुस क्रोधायमान हुवा जब सुनाभ नामका दैत्यने उसकु कहाके ये ब्राह्मणकु जाने दो उसकु भगवानकी मदद हे,

कुस कहेता हे=विष्णुभगवानने जो लोककु मारा हे उसकु हम मारेगा. उसकु बांधके लाओ, जीसकी पाससे छुटके जायगा उसकु मारडालेगा, इसपरम्मे बोत युद्ध हुवा, बोत दैत्यो मारा गया: जब कुस भगवानकुं कहेने लगा के दुर्वासाकु गोमती स्नान कराके जाओ एसा सुनके

भगवान कहेते हे—सबका मोक्षकरनेवाली गोमतिकु तुम रोकके रहा हो ! तुमकु जिता रहेना हो तो तुम लडकालडकी सह चला जाओ, यहां नहि रहेना. ओर नहि

आओगे तो तुमेरा निर्वंश निकाळ दिया जायगा.

कुस कहेतेहे—विष्णु आप मेरेकु मारोगे तो मेरा मोक्ष होगा, ओर मे मारुंगा किरती होगी. अब युद्ध करो एसा सुनके भगवान ओर बलभद्र तैयार होके हथियारसे दैंत्योपर मार चलाया. ओ सब दैत्योका नाश हुवा. जब कुस दैंय सांग लेके विष्नु भगवानेकु मारनेकु गया. इसकु सुदर्शनचक्रसे भगवानने कटका करके कुसकु मारा कुसका शरिरका कटका लेके दैंय शिवालयमे गये के कुस सजीवन हवा. जब भगवान दुर्वासा मुनिकु पुछने लगा के इसका कारण क्या हे? दुर्वासा कहेतेहे के शिवका वरदान हे. तब भगवानने उसकु मारके जमीनमे दाटे ओर शबके पर शिवलींग स्थापन किया. जब कुस कहेने लगाके भगवानने द ा कियाहे अब उसके पास वरदान मांगना; एसा विचार करके भगवानकु कुस कहेतेहे अब मेरा रक्षणकरो

भगवान कहेते हे-हे दैंत्योका राजा कुस हम तेरी पर प्रसन हुं सो वरदान मागनो हो सो माग,

कुस कहेता हय-हे भगवान मेरा नाम कायम रहे ओर शिवलिंग अपने स्थापन की हे इसका नाम कुसेश्वरमेश नामपर रखो ओर मेरी कीर्ती बढे एसा करो.

भगवान कहेतेहे=तथास्तु जो आदमी यात्रा करनेको आय सो दरेक आदमी वेसनका एक लड्डु, घी का दीवा ओर एक पइसा दक्षणा तुमकुं न चडावे वहां तक आधी यात्राका फल जात्रिकु मिले ओर चढावे उनकु पुरा फल मिलेगा:

श्री द्वारका महातमका अध्याय ११ मा संपूर्ण
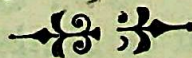
अध्याय ११ मा

पंचतीर्थकी माहीती

गोमती किनारे हरिकुन्ड जहां स्नान होवेहे; वहां स्नान करके अगर चर्णामृत लेके प्रथम किनारापर नरसीमहेताकी हुंडी भगवानने स्विकारिथी उसका दर्शन करना ओर उसकी पास गोवर्धननाथजीका दर्शन करना. पंचतिर्थमें खाली हाथसे दर्शन नहि करना. उससे फल नहि मिलताहे, वहांके आगल चलते प्रथम ब्रह्माजीघाट गौतमघाट. गंगाघाट. पांडवघाट. रुपि घाठ. वासुदेवसंगमघाट, इतने घाट हे वहां चर्णामृत लेके ब्राह्मणकु दक्षना देनाचाहिए एसा महातमहे, गौघाटपर गौकादान अवस्य करना चाहिए. वसुदेवघाठपर गौमुखी. आसनीयुं पंचपात्र आचमनीका दान मालासहित करनेका महातमहे. संगमघाटपरसे किनारापर चलतेमें चक्रतिर्थ आतेहेवहां

रेतका लड्डु करताहे, और खेत खेडाके जो दावेंगा ऐसा मिलेंगा. इसकेलिए रुपादान वहां खेतमें रखनेका महातम हे. ओर ऐसा करनेसे यात्रामे कोइ वाघ नहि आते हे आगे रुपणकुंड हे. वहां जांबुवतीजी रीछका अवतारसे मुक्त हुइथी. वहां चांदीको पलि देना पडती हे, आगाडो रत्नेस्वर महादेवके पास मकानदानका संकल्प होताहे आगे जांबुवंतिजी सिद्धेस्वर महादेव, ज्ञानवाव, रामचंद्रजी. सावित्रीवाव जिससेमे रणछोडजी की मुर्ति निकलीहेः आगे दाधादर कुवा वहां नरसीमहेताकी हुंडी भगवानेस्विकारिथी, वहां से भद्रकालि, भागिरथिगंगा. रुक्मणिका मंदिर जिसको द्वारका महातममे कथा हे, सो होके गयाकुन्ड कैलासकुन्ड, जयविजय नामका पळोडियाका दर्शन करके हरिकुन्डपर होके मंदिरमें दरसन करनेसे परिक्रमा पुरी होति हे, ब्राह्मण पंडाको आज्ञा विना कोइ कुच्छ करतेहे उसकु फल नहि मिलता हे. क्युंके पंडाकी ठोपना करनेहे महा पाप हे.

श्री द्वारका महातमका अध्याय १३ मा सपूर्ण

ककलास कंडका महातम

द्वारकामे नृगराजा कावि हावा अवतारसे केसे मुक्त केसे हुवा एसा सवाल प्रहलादजीकु पुछते हे.

प्रयलादजी कहेतेहे-नृगराजा लक्षमिवाले बुद्धिशाळी होनेसे हर रोज हजार गोका दान करतेथे एक दिन जैमिनी नामका ब्राह्मण कु एक गै राजाने दानमे दी. ऊसकु पानी पिलानेके लिए गायकु लेके गया, रस्तेमे हाथीकु देखके गै गभराके भगी, और राजाकी दुसरी गाय जो थी ऊसका टोळामे मिल गइ; ये बात राजाकु मालुम नहि थी. और जैमिनी ब्राह्मण गायकी तलास करके पता नहि मिलनेसे मकानकु आया: दुसरे दिन ये गै सोमशर्मानामका ब्राह्मणकु दानमे दी. ये जैमिनि ब्राह्मनके

देहनक आइ, उन दोनुका झगडा हुवा तब दोनु आदमी राजाकी पास अदालतमे गया. दोनु ब्राह्मणकु एकज गायका दान दो वख्त दिया जिस से ब्राह्मणोने राजाकु श्राप दिया के तुमकु काकीडाका अवतार प्राप्त होगा.

राजा कहेते हे–महाराज आपने श्राप दिया उसका निवारण कैसे होगा ? एसा कहेनेसे दोनु ब्राह्मणो कहेतेहे के हे राजा द्वापरयुगंमे देवजीका उदरसे भगवान प्रगट होके खेलनेकु निकलेगा ओर तेरेकु जलमेसे बहार फेंकदेगा. जब, तुमारा उद्धार होगा. इस तरहसे उसका उद्धार भगवानने किया पिछे वरदान दिया के ये कुंड तेरा नामसे प्रख्यात होगा. ये कुंडमें जो लोक स्नान करेगे उसकु मुक्ति होगा, एसा कहेके भगवान अंतरधान हो गया.

श्री द्वारका महातमका अध्याय १३मा संपुर्ण

अध्या १५ मा

ब्रह्मकुन्ड इंद्रेस्वर महातम

यादवोंकी साथ श्रीकृस्न भगवान द्वारकामे आया, जब ब्रह्माजी भगवानका दरसनके आये, उसने एक कुन्ड बांधके अपना नामसे उसका नाम ब्रह्मकुड रखा हे जिसमे स्नान करनेसे सब पाप नष्ठ होवे हे,

पिछे इद्रेस्वर नामसे द्वारकामें तिन माइल दुर शिवलिंग स्थापन किया हे,

श्री द्वारका महातमका अध्याय १४मा संपूर्ण

अध्या १६ मा

नागनाथ महातम

नागनाथ महादेव गोपितळावके रस्ता पर आता हे. वहां महादेवका लिंग बोत पुरातनी और बार लिंग हे वहां शिवपुजन करनेसे नागलोककी प्राप्ति होती हे, वो सब तिर्थ उपरांत बड़ा तिरथ हे, लेकीन जब समुद्रने पृथ्वीकु डुबा दिया, उससे बोत तिरथोका नास हुवा हे लेकिन जो आदमी द्वारकाकी प्रदक्षणा करते हे उनकु यें सब तीर्थका फल मिला जाता हे.

श्री द्वारका महातमका अध्याय १६मा संपूर्ण

ज्ञानवाव

अध्याय १६ मा

सिद्धेस्वर महातम
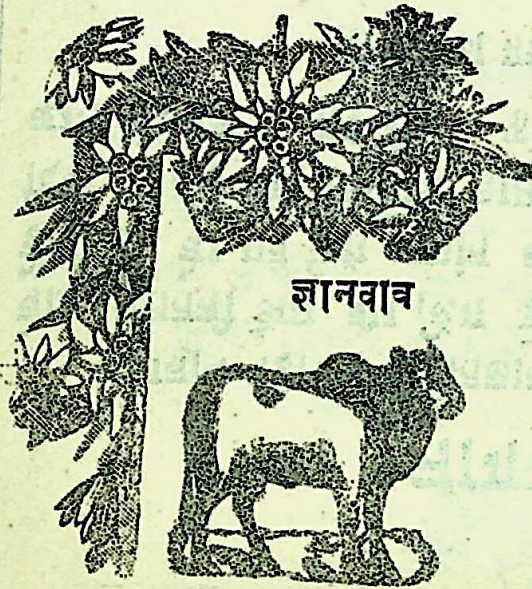
सनकादिक रुषिओ द्वारकामे आके रहा ब्रह्माजि.ने शिवपुजनकी आज्ञा दि. उससे रुषि. ओ द्वारकामे गये ओर शिवकी भक्ति करने लगे. शिवलिंगकी स्थापना की हे ओर सिद्धे-स्वर नाम रखा हे, वहां एक वावडी निकालि गइ उनका नाम ज्ञानवाव हे, ये वावसे चर्णामृत लेनेसे अधिक ज्ञान होता हे.

श्री द्वारका महात्मका अध्याय १६ मा संपूर्ण

अध्याय १९ मा

यात्रा करके जो आदमी जावे उसका दरसनका फल,

(वसिष्ठने दिलीपकु कहीथी सो वारता)

मार्कंडेय रुषि कहेते हे–जो आदमी प्रत्येक वरस द्वारका जाते हे उसका चर्ण रजसे अघोर पापीकु भी स्वर्गकी प्राप्त होती हे. श्रीकृस्नका दर्शन करनेवाला आदमिका दुसरा कोइ लोक दरशन करे उसका ७ जन्मका पाप निवारण होता हे, हे राजा वशिष्ठने दिलिप राजा पास व्रत्तांत कहाथा सो सुनो.

वशिष्ठ कहेतेहे–हे दिलीप. काशिमे पाप करनेसे जो वज्रलेप होता हे सो प्रयाग के दुसरे कोइ ठिकाणे नहि मिटते हे. एसा सुनके दिलिप कहेतेहे के दुसरा कोन तिर्थ एसा हे के काशिमे रहेहुवे वज्रलेप नाश होवैं ? एसा सुनके वशिष्ठ

कहेवे हे क काशिमें एक दंडी सन्यास रहेता था. वो अपना सत्कर्ममें कुशल था, ओर धरम जानेवाला था. वहां एक नवयोवना स्त्रि आके अपना वस्त्र उतारके गंगा स्नान करनेकु गइ. उनकु देखके सन्यासी स्त्रि पर आशक हुवा. स्त्रि बडी व्यभिचारणी थी, ऊस लिए दोनुका समागम हुवा, ओर सन्यासि कर्मेसें भ्रष्ट हो गया ओर स्नान ध्यान जप तप छोडके मांस मदिराका भक्षण करने लगे, एक दिन मांस लेनेकु सन्यासि जंगलमें गया. वहां एक चांडालणि पर आशक हो के भ्रष्ट हुवा, ओर चांडालणीका मकानमें मर गया. मरण पीछे पाप भोगनेके लिए वाघ, सर्प, कुत्ता. नहार, शियाळ, सुवर ओर गधाका अवतार लेके छेवट राक्षसका अवतार आया ओर पर्वतमे फिरने लगा, वहां एक दिन द्वारकाकी यात्रा करके एक आदमीका आना हुवा: उसका दरशन होनेसे राक्षसका अवतार छुट गया. ओर पुर्वजन्मका ज्ञान हुवा,

राक्षस यात्रा करनेवालेकु ... कहांसे आता हो

यात्रावाला आदमि कहेतेहे श्रीकृष्नपरमात्माका दरशन करके द्वारकासे आते हे.
एसा सुनके राक्षस द्वारकाकु गया ओर अपना पाप भस्म होनेसे वैकुंठमें गया,

श्री द्वारका महातमका अध्याय १७मा संपुर्ण:

अध्याय १८मा

द्वारका महातमका फल

बलिराजाकु प्रहलादजी कहेतेहे के जो आदमी कलियुगमें दररोज द्वारकामहातमका पाठ करे उनकु सुवर्ण, गौ. हाथी, पृथ्वी, मकानका दान किया बराबर पुन्य होतेहे, ओर जो आदमी द्वारकामहातम दुसरेकु सुनावे उसकु दरेक मासका अपवास करनेका फल मिलतेहे, ओर कलियुगमें जो आदमी द्वारकामहातमका विस्तार करतेहे

उनका सभी पाप नस्ट हुवा एसा समजना, जहां, तक कोइ आदमी द्वारका महातम लीखे नही वहां तक उसका शरीरमे ब्रह्महत्याका पाप रहेते हे जो आदमी कलियुगमे द्वारका महातम लीखें उसकु सब तीर्थ करनेका फलभी मीलता हे. द्वारका महातम सब तीर्थो ओर सब दानका फल देनेवाला हे, ओर सब रागनास करनेवाला हे, अधिक संपती देनेवाला हे जीसका मकानमे द्वारका महातम हे, उसकु पित्रोकु तृप्त करनेका फल मीलता हे. जे जगोपर द्वारका महातमका पाठ होता हे, वहां विष्णु भगवान पधारते हे. ओर चार बेद ओर सर्व देवताओ भी पधारते हे.

ये द्वारका महातम सुनके द्वारका महातम सुनानेवाला ब्राह्मणकु दुध देनेवाली गौ अगर यथाशक्ति दक्षणा देके राजी करना चाहिए वास्ते हे राजा दुवारका महातम सुनके मकानमे रखनेसे सब पापका नास होवे हे. जो आदमी जात्रा सफल करे विना जाते हे उसकि जात्रा निष्फल होता हे. क्युं के ब्राह्मणका अपमान करनेसे

भगवान नाराज हे. भगवानका पिछ दुर्वासा रुषिने भगवानकुं श्राप दिया लेकीन भगवानने पंडाको आज्ञा उलंघन नहो किया हे इस तरेहसे ये तोर्थसे जो आदमी पंडाको आज्ञा विना ओर जात्रा सफल करे विना जाते हे उनको जात्रा नस्ट होके पितृ नर्कमे गीर पडते हे.

श्री द्वारका महातमका अध्याय १७मा संपुर्णः

अध्याय १८मा।

बेट संखोधार महातमका फल

प्रहलादजी कहेते हे के रुषिओ पुर्वे अर्जुन राजा श्री कृस्न भगवानको पास हाथ जोडके कहेने लगा के भगवान संखोधारके लिये मेरा मनसे कुच्छ शंका हे उसके लीये शंखोधारका महातम मैयेकु सुनाओ.

भगवान कहेतहे=हे अर्जुन ! शंखोधार जेसा दुसरा कोइ तिर्थ नहि हे. प्रभास जेसा तिर्थ, गंगादिक नदीओ. पर्वतो. समुद्रो और सभी देवताओ शंखोधारमे वास करते हे. जो आदमी अपना मकानमे बेठके शंखोधारका नामका स्मरण करते ऊसकु फिर जन्म नहि लेना पडेगा, जो आदमि शंखोधारमे रहे के शंखनारायणका दर्शन करतें उसकी सेकडों पेढी विष्णुलोकाकु जातीहे और एक लाख गौ का दान करनेसे जो पुन्य होताहे इतना पुन्य शंखनारायणका दरसन करनेसे होताहे, हे अर्जुन ब्रह्माने सब तिरथकु उत्पन्न करके सभी तिरथोका पुण्यका अंदाज निकालने लगा तब मालुम हुआके जेसे वैधूतमें दानपुन्यकी संख्या नहि हे एसे शंखोधारमे स्नान करके शंखनारायणका दरसन करनेवालाका पुन्यकी शंख्या नहि हे, मतलबके बात पुन्य हे दुनिआ पर जो तिरथो हे वो शंखोधारमे रहेगा हे, शंखोधार जेसा कोइ तिरथ नहि हे. ओर सब मौलके साष्टीन कयोइ तीर्थ शंखोधारमें ...

संखोधारका दर्शनसे महापातकी जेसा के ब्रह्महत्या. गौहत्या. स्त्रिहत्या ओर बालहत्या करनेवाला ओर गुरुकी पत्नि साथ गमन करनेस जो पाप लगते हे सो सब पाप नष्ट होता हे, एक बखत अपनी उमरमे संख तलावका स्नान ओर शंखनारायणका दर्शन करना एसी शास्त्रकी आज्ञा हे,

श्री द्वारका महातमका अध्याय १९ मा संपुर्ण

अध्याय २० मा

गोपी तलाव महातम

प्रहलादजी कहेते हे—यादवोका राजा कंसकु मारके श्रीक्रस्न भगवानने मथुरा मे उग्रसेनका अभिषेक किया पिछे उधवजीकु अपना स्नेहिओ ओर गोपीओकु कुश

करनेके वास्ते मथुरामें भेजा, वहां यसोदाजी ओर नंदरायजीने श्रीकृष्ण भगवानका समाचार पुछा.

उधवजी कहेता हे के भगवान कुसल हे. मथुरांसे गोकुळ आके अपना अच्छा करेगा, एसा वातचित करते करते रात चलि गइ. फजरमे रथ नंदरायके मकान पास देखके गोपि आपसमें बात करने लगी के कोन आयाहे? जब मालुम हुवा के ऊधव आया हे. तब गोपि पुछनेकु चलि और भगवानका खबर पुछने लगी, गोपि कहेतेंहे के हमेंरा मन हरण करके गये हे, सो कहां हे ? हमकु बताओ, एसा बचन सुनके ऊधव कहेने लगा के मेरेकु बुलानेके लिए भेजा हे. तुम सब चलो. एसा सुनके उधवकी साथ गोपीओ द्वारका खुश होके आइ. पिछे उधवने कहा के अब तुम यहां रहो. यहां श्रीकृस्न भगवान पधारेगा और तुमारा उद्धार करेगा, एसा सुनके गोपिओ कहेने लगी के भगवान हमकु बताओ पिछे ऊधवजीने भगवानकु बुलाया. भगवानकु

देखके गोपिओ खुश हो के अ: हमेरा जन्म सफल हुवा.

भगवान कहेते हे–हे गोपिओ तुम ये तलावमें स्नान करो, गोपि कहेते हे के हमकु ये तलावका महातम सुनाओ.

श्रीकृस्न भगवान कहेते हे–हे गोपिओ मेरी साथ तुमारा संबन्ध हुवा हे जिससे स्नान करनेके लिए हमकु इधर हि रहेना पडेगा, और हमारा रहेनेसे जो आदमि यहां स्नान करेगा उसकु गंगाजीका फल मिलेगा और विष्णुलोककी प्राप्ति होगी.

गोपि कहेने लगी–हे महाराज आप प्रसन्न हूवे हो तो वहां हमारा नामसे प्रसिध तलाव बनाना चाहिए. एसा सुनके श्रीकृस्नभगवानने एक तलाव बनाके उसकानाम गोपीतलाव रखा और गोपिओकुं वहां रहेनेकी आज्ञा करके भगवान स्वधाममें पधारे वहां ये तलाव गोपीतलावका नामसे प्रसिध हे.

श्री द्वारका महातमका अध्याय २० मा संपुर्णः

अध्याय ६१ मा

पिन्डतारक महातम्य

प्रहलादजी कहेतेहे=द्वारका यात्रा करके पिन्डतारक (पींडारा) नामका तिर्थमे जाना, वहां विष्णु चतुर्भुज रहेतेहे वहां कपालमोचन नामका प्रख्यात देवता रहेते हे उसका जो दर्शन करे, सो ब्रह्महत्या जेसा पापसे मुक्त होते हे, ये रहा तिर्थमे रुक्मिवति नदी हे. कुन्डरुप तिर्थमें श्राध करनेवाला आदमीके पिछाडी श्राधकी इच्छासे सब पितृओ आतेहे वहां अगस्य नामका एक तलाव हे वहां स्नान करके विधिपुर्वक श्राध करनेसे गयाश्राधका फल मिलता हे. वहां रुक्मिवति नदी गंगा, गया कुरुक्षेत्र नैमिषारण्य ओर पुष्कल आदि त्रैलोकका सब तिर्थो, देवताओ आते हे उसमे संशय मत समजना.

पितृ ओ कहेतेहे के हमारा कुलमे कोइ एसा पुरुष उत्पन्न हो के ये वडा तिर्थ पिन्डतारकमे पिन्डदान दे जिसमे हमेरो गति होवे. यहां सब पितृका यक्षपणाः पिशाच पणाः प्रेतपणा; पसुपक्षिका अवतार ओर नर्कमे डुबा हुवा सब पितृको मोक्षगति होती हे. वहां पिन्ड तरते हे, वहां श्राद्ध करना गया श्राद्धसे अधिक हे.

श्री द्वारका महातमका अध्याय २१ मा संपुर्ण

अध्याय २२ मा

पीपा भगतकी छापका महातम

कलियुगमे सोनेकी द्वारका जब समुद्रमे गुप्त हुइ तब भगवानका भक्त पीपाजी था ये दिन और रात भजनकिर्तन करतेथे, ये पीपा भगवानका एसा भक्त था के ये

सोनेकी द्वारका जब उसमे डुब गइ तबमो द्वारका और भगवानका दरशन कर शकता था. कोइएक आदमीने ये भगतकी ठठा किया और कहेने लगा के तुमको दरशन होता हे सो भगवानका (मकान) तुमने देखा होगा, एसा सुननेसे पीपा भगतकु लगाके य मेरी ठठा करते हे. उससे समुद्रमे पिपा भगत पडके सोनेकी द्वारकामे भगवानकी पास जाके दर्शन किया, भगवानने कहा के तुम अब पिछे जाओ एसा सुनके पीपा भगत कहेने लगा के महाराज हम जायगा तो सही. लेकीन मेरी बात सची कोइ नहि मानेगा. पिछे भगवान प्रसन होके पिपाका हाथमे शंख, चक्र, गदा. पद्म दे के कहाके ये मेरा पका निशान हे. इस छाप कोइ आदमि लेगा उसकु यमराजा दंड नहि देंगा, एसा कहा तब पिपाभगत फिर अपना स्थानक पर आरंमडा आ पहोंचे. उस दिनसे जात्रि वहांसे छाप लेते हे.

५०

श्री द्वारका महातमका अध्याय २२ मा संपुर्ण.

अध्याय २३ मा

ओसवाल नाम कैसे पडा

पुर्वे बहुलाश्व राजा नारदमुनिकु पुछने लगा के हे मुनि तिन लोकमें प्रसिद्ध द्वारका पुरीमे श्रीकृष्ण भगवान रहेतेहे ओर ये पुरी श्रीकृष्णका अंगसे उत्पन हुइ हे एसा सुना हे सो इस बात हमकु कहो,

नारदजी कहेतेहे—वैवस्वत मनुके वंशमे ख्याति नामका एक चक्रवति राजा था उसने दसहजार वरस प्रथविका राज किया. उसकु उतान. आनर्त ओर भुरिश्रेण एसा तिन लडका था. एक दिन पुत्राकु राजा तिन दिशाकी प्रथवीका राज देके कहेने लगा के प्रथवीपर हमारा राज हे सो करो. एसा सुनके आनर्त कहेने लगे के पिता यें राज आपकाही नहि हे ओर तुमने उसकु अपना बलसे जीतो भी नहीहे, क्युं

के श्रीकृस्न जेसा कोइ बलवान नहि है. फोक अहंकार करना नहि, एसा सुनके अपना पुत्र आनर्तकु राजा कहेने लगा के तुम हमारा राज छोडके चलाजा, तुमकु कृस्नभगवान नइ पृथ्वि देगा ओर तेरेकु मदद करेंगा, एस कठिन वचन सुनके पश्चिमसमुद्र किनारा पर तपश्चर्या करनेकु बेठा. एसा करते करते दसहजार वरस पिछें श्रीकृश्न भगवान प्रसन्न हुवा, और दरसन देके कहा के हे आनर्त! हम तेरी भक्तिसे प्रसन्न होकर तुमकु वरदान देतेहेके इच्छाहोवे सो मांगना- जब हाथ जोडके आनर्त कहेतेहे हमारा पिताने देशनिकाल कर दिया है उससे आप कृपा करके हमकु दुसरी जमिन देना जहां रहेनेसे आपकी भक्ति करु. जब भगवान कहेने लगा हे राजकुमार, जगतमें दुसरी जमीन नहि हे लेकिन तेरी भक्तिसे वैकुंठमेंसे एक हजार योजन जमीनका टूकडा आपकु दिया जाता हे. एसा कहेके सुदर्शनाचक्र समुद्र पर धरके उसकोपर सो दोजन जमीनाका टुकडा रखा जब आनर्त राजाने एक

लाख वर्ष तक वहां राज करा, और ये प्रथवि वैकुंठ जेसी होने लगी, इस बात सर्याति मालुम हुई और श्रीकृष्णका प्रेम देखके आश्चर्य हुवा. पिछे आनर्तका पुत्र रेवतराजाने द्वारकाका राज करके अपनी कन्याकु लेके स्वर्गमे गया: आनर्त वैकुंठमेसे ये प्रथ्वि मिली जिससे पवित्र है और इसका नाम ओखा पडा हे. और श्रीकृष्णका वास यहां है- (गर्ग संहिता अध्याय ९ मा.

श्री द्वारका महातमका अध्याय १२ मा संपुर्ण

बेट सांखोद्धार नाम केसे पडा

गर्गसंहिता अध्याय १२ मे कहेते हे के त्रीतक नामका मुनि ओखा देशमें आये थे जब एक तलावमें स्नान करके भगवानकी पुजा ध्यानमें (ये तलाव हाल

शंखतलावसे प्रसिद्ध हे) बेठा उस वखत उसका शिष्य कक्षिवानने मुनाका शंख था सो चोर लिया, मुनि ध्यानमेसे जाग्रत हुवा ओर शंख नहि देखा. तब क्रोधायमान होके श्राप दिया के मेरा शंख चोरा होवे सो शंख होजायगा ये श्रापसे कक्षिवान शंख हो गया, कक्षिवान मुनि पास क्षमा मांगके अपना उद्धारके वास्ते प्रार्थना किया जब मुनि शांत हुवा तब कहेने लगा के मेरा श्राप मिथ्या न होगा. अब भगवानकी भक्तिसे तेरा मोक्ष होगा. वहांसे समुद्रमे रहेके भगवानकी भक्ति करताथा एक दिन भगवान प्रसन्न होके अपने हाथसे कक्षिवानकु जलमेसे बहार निकालके उद्धार किया ओर शंखका स्वरुप छुटके स्वर्गमें गया. शंखका ऊद्धार हुवा जिससे शंखोद्धार नाम पडा हे.

श्री द्वारका महातमको अध्याय २६ मा संपुर्ण

श्री द्वारकाधीसजीकि पुजा और भोगकी माहिती

द्वारकामैं श्री द्वारकाधीशजीकु फजरमैं मंगलाभोग पिछे माखनमिसरि पीछे स्नान भोग. चोथो शणगारभोग, पीछे गवालभोग. पीछैं राजभोग, पीछे वंटाभोग ,पीछे ऊथापन भोग, पीछे संध्याभोग पीछै शयनभोग और रात्रिकु बंटाभोग इस तरेहसे अग्यारा भोग धरा जाता हे, राजभोग बालभोग श्रीमंत महाराजा गायकवाड सरकार बडोदैंवाला तरफसे लक्ष्मिभंडारमैंसे धरा जाता हे. क्यु के सरकारमे राजभोग. और बालभोगकी रकम लक्ष्मीभन्डारवाला स्वामी महाराजकु मिलती हे, और माखन मीसरीका भोग एक जात्री तरफसे धराते हे और सब भोग श्री द्वारकाधिशजिका पुजारी अपना तरफसे धरते हे और जो यात्रावासि द्वारकाधिशजिकु भोग धरनेकु पुजारीकु रकम देते हे ऊनकु भोग अपना भोगके साथ धरते हे।

श्रीजीका चर्ण स्पर्स

श्री द्वारकाधीशजीका चर्णस्पर्श सब जात्रिअवश्य करते हे, उस वखत द्वारकाधिसजीका चरणस्पर्शकी लागत एक आदमीका रु, ०-८-६ साडाआठ आना लगते हे. श्री त्रिकमजीमे रु,०-२-६ साडाचरआना श्री प्रदयुमनजिमे रु ०-४-६ साडाचार आना लगते हे और द्दकोजो और लक्ष्मिजि दोनुका साडाचार आना लगते हे और श्रीजांबुवतिजि राधिकाजो लक्ष्मिनारायण राधाक्रस्न, पुरुषोतमजि माधवरायजि और अंबाजि सबकि चर्णपुजा करनेवालाकु दो दो आना लगते हे ये लागत एक दफे दिये पिछे हमेश चारणस्पर्श करनेको छुट हे, सब मंदिरमे चर्णपूजा करनेकि जिनकि शक्ति न होवे सो फक्त द्वारकाधिशजिका चर्ण छुते हे. क्युके जिसके स्रोतर आये उसकि पूजा अवश्य करना चाहिए,

श्री द्वारकाधीशजीकु केशर स्नान.

श्री द्वारकाधिशजीकु केशर स्नान करानेकी इच्छा होवे उसकु केशर स्नान बदल फक्त रु. १। सवा देना पडेगा. ओर पंचरामृतकी सामग्री अपने यहांसे लेते हे. ओर अपना पास न होवे तो पुजारीकु कहेनेसे पुजारी देते हे,

श्री द्वारकाधीशजीकी महापुजा,

जिसकु महापुजा करनेकी होवे उसकु धोती १ (हाथ सात से नव तक लंबी) सुथण (पायजामा) नंग १ गज एक. वाघा गज साडाचार, पटका नंग दो गज २॥ अटी लंबा पाघ एक दुपटा गज ४॥ और पछवाइ एक. इतनां वस्त्रा चाहिए, ओर श्रद्धा मुजब भेट भगवानकु धरनी चाहिए. ओर अपनी तरफसे भगवानकु भोग धरना चाहिए. कपडा केसा लेना सो अपनी शक्तिकी बात हे.

धोती पुजा,

धोती पुजा श्रीजीकी करनेवालेकु धोती हाथ नव दुपटा गज ३॥, अंगुछा गज एक, इस मुजब वस्त्र चाहिए. और श्रीजीकु भोग और भेट अपना तरफसे चाहिए.

श्री लक्षमीजीकी महापुजा

साडी गज एक, लंबा गज ६॥, लैगा गज ।। चोली गज ।।, इस मुजब वस्त्र चाहिए. ये कपडां कैसा लेना सो जात्रीकी मरजी,

श्री द्वारका महातम का २५ मा अध्याय संपुर्ण,

संपुर्ण.

चार धामकी स्तुति.

पुर्व दिशा जगनाथ स्वामी दक्षिण दीशा रामनाथ है
पश्चिम दिसा रणछोड त्रीकमजी उतर खंड बद्रीनाथ है
ब्रह्मा वरण जगनाथ स्वामी जोगी वरण रामनाथ है,
क्षत्री वरण रणछोड त्रीकमजीं तपशी वरण बद्रीनाथ है
वेत देत जगनाथ स्वामि पट देत रामनाथ है
छाप देत रणछोड त्रिकमजी कंकण देत बदरिनाथ है.
अटका चडत है जगनाथ स्वामि जल चडत रामनाथ है,
माखण मिसरी चढत रनछोड त्रिकमजी मेवा चढत बदरनाथ है
चलोरे मधु चलोरे संतो गोमतीगंगान इए
दर्शन देत रणछोड त्रिकमजी फिर जनम नहि पाइए.
आवा ग्रमन मिट जाइए. संपुर्ण,

अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं श्री वासुदेवं हरे ।
श्रीधरं मुधरं शैलजा वल्लभं कार्तिका नायकं श्री रामचन्द्र भजे

श्री द्वारकानाथजीका भजन

श्री द्वारकामे राज करत रणछोड—द्वारका दो वार-
आसपास रत्नाकर सागर, बिचमें गोमति करत किलोल—श्री द्वारकामे
एसी कांसकी झाडी लगत है, कोबा बसत करोड-श्रीद्वारकामे
थाली लोटा छिन लेतहे तुंबा डालत फोड-श्री द्वारकामे०
पींपा भगतकीं छाप लगत हे काबा कठिन कठोर श्री द्वारकामे
मंदिर मन्दिर झंझ बजत हे सखनको घमघोरसीं द्वारकामे०

दुरेऽपि संगमं द्रष्ट्वा श्रुत्वा वा सागर ध्वनि ।
विलयं यांति पापानि सिंह द्रष्ट्वा मृगा इव ॥ १ ॥

अर्थ-जेसे सिंहके देखनेसे मृग भागते हे एसे दुरसे गोमतीजींका संगम देखनेसे ओर सागर (समुद्र)का शब्द सुननेसे सब पाप भागते हे दुर होतेहे.
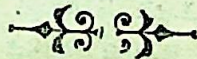
नामर्दाईका नाश करनेवाली आनन्ददायक

देवकी याकुती

इस गोलियोके सेवनसे कमजोरी सब बिमारीयां अवश्य नाश हो जाती हे। स्वप्नामे विर्यपात होता होवे, स्रिओके साथ वात करतेहीं विर्य पतन होता हो कमर हाथ पग आदिमे दर्द रहता हो, थोडे परिश्रममें भीं थकावट मालुम होता हो. किसी भी काममे मन न लगता हो, शरिरकी इंद्रियां अपने अपने कार्यको ठिक ठाक न कर शकती हो, पाचन बराबर न होता ओर उत्साह. हिम्मत शौर्य ओर धैर्य रदयमे न मालम पडते हो विगेरे कारण ओर रोग हो ओर आप थोडेही खर्चमे इन सबसे छुटकारा पाना चाहते हो तो हमारी इस गोलियौंका सेवन किजीए. तुरत फायदा होगा

विसेष खुलासाके लिए 'बालरक्षा' नामका पुस्तक यांचो भेट मिलता हे,

त्रवाडी देवजी दयाशंकर धन्वंतरी औषधालय—जामनगर

श्री द्वारकाधिसो जयती.
दरेक मुमुक्षजनोके वांचनेलायक हिन्दीभाषामे
ओर गुजराती भाषामे द्वारका महातम्य
पीडतारक महातम्य अमारा
श्री राधा कृष्ण प्रिन्टीग प्रैस छापखानामें
मीलताहे.
त्रवाडी देवजी दयाशंकर
जामनगर